Roll No.....

Total No. of Section : 03
Total No. of Printed Pages : 03

Code No. : B/1002

Second Semester Examination, May 2017

M.A. HINDI

Paper - II

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य भाग–2

Time : 3 Hrs. **Max.Marks : 80**

टीप : खण्ड 'अ' में दस अति लघूत्तरी प्रश्न हैं, जिन्हें हल करना अनिवार्य है। खण्ड 'ब' में चार लघूत्तरी तथा आंतरिक विकल्पयुक्त प्रश्न हैं। खण्ड 'स' में चार दीर्घउत्तरी प्रश्न हैं, जिनमें से प्रत्येक में आंतरिक विकल्प हैं। खण्ड 'अ' को सबसे पहले हल करें।

खण्ड 'अ'

निम्नांकित अतिलघूत्तरी प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दें :(2x10=20)

प्रश्न 1. सुंदरकांड का नामकरण किस आधार पर किया गया है ?

प्रश्न 2. हनुमान की लंका यात्रा में उनका मार्ग रोकने वाली दो नारी पात्रों के नाम लिखिए।

प्रश्न 3. भ्रमरगीत का उद्देश्य लिखिए।

प्रश्न 4. गोपियों ने कृष्ण और राम की तुलना किस तरह की है ?

प्रश्न 5. 'उड़ि जाए कितहु गुड़ी तउ उड़ाइक हाथ'–इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।

प्रश्न 6. 'रीतिबद्ध काव्य' से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 7. सुजान कौन थी ?

प्रश्न 8. घनानंद किस उपनाम से प्रसिद्ध हैं?

प्रश्न 9. रीतिकालीन काव्य की दो प्रमुख प्रवृतियों का उल्लेख कीजिये।

प्रश्न 10. भक्तिकाल की काव्य धाराओं एवं उनके प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

P.T.O.

खण्ड 'ब'

निम्नांकित विषयों पर अधिकतम 250 शब्दों में टिप्पणी लिखिये(5x4=20)

प्रश्न 1. गोपी-उद्धव संवाद।

OR

सूर का उक्ति-वैचित्र्य।

प्रश्न 2. सुंदरकांड का कथानक।

OR

तुलसी की भक्ति-भावना।

प्रश्न 3. मुक्तककार बिहारी।

OR

बिहारी की भाषा।

प्रश्न 4. घनानंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

OR

भक्तिकाल की उपलब्धियाँ।

खण्ड 'स'

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अधिकतम 450 शब्दों में लिखिये : (10x4=40)

प्रश्न 1. सूरदास की भावानुभूति की दृष्टि से 'भ्रमरगीत' के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

OR

'सुंदरकांड' के आधार पर तुलसीदास के भाव एवं शिल्प कौशल का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2. 'बिहारी ने अपने दोहों में व्यंजना-शक्ति का सहारा लेकर 'गागर में सागर' भरने का सफल प्रयोग किया है।' इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।

OR

घनानंद के विरह वर्णन की विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

निर्गुन कौन देस को वासी ?
मधुकर! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति सांच न हांसी।
कौ है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि को दासी ?
कैसो बरन, भेस है कैसो, केहि रस में अभिलासी।
पावैगो पुनि कियो आपना जो रे! कहैगो गांसी।
सुनत मौन है, रह्यो ठग्यो सौ सूर सबै मति नासी।।

OR

हैं सुत कपि सब तुहहिं समाना। जातुधान अति भट बलवाना।।
मोरें हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा।।
कनक भूधराकार सरीरा। समर भयंकर अति बलबीरा।।
सीता मन भरोस तब भयेऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयेऊ।।
सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरूड़हि खाइ परम लघु ब्याल।।

प्रश्न 4. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये –

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात।।
नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं बिकासु इहि काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगै कौन हवाल।।
नेह न, नैननु कौं कहु, उपजी बड़ी बलाइ।
नीर-भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ।

OR

हीन भएँ जल मीन अधीन, कहा कहु मो अकुलानि समानै।
नीर-सनेही कों लाए कलंक, निरास है कायर त्यागत प्रानै।।
प्रीति की रीति सू क्यौं समुझै, जड़ मीति के पानि परे कों प्रमानै।
या मन की जु दसा घनाआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै।।

---x---